

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के इंडिया-अरब कल्चरल सेंटर ने 'सरदार वल्लभ भाई पटेल: व्यक्तित्व, कृतित्व और भारतीय मुसलमान' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का किया आयोजन

नई दिल्ली, 23 दिसंबर, 2025

इंडिया-अरब कल्चरल सेंटर जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 22-23 दिसंबर 2025 को 'सरदार वल्लभ भाई पटेल: व्यक्तित्व, कृतित्व और भारतीय मुसलमान' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन सत्र 22 दिसंबर 2025 को सुबह 11:30 बजे इंडिया अरब कल्चरल सेंटर जेएमयू के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित किया गया। आयते कुरान की तिलावत के बाद सेंटर के डायरेक्टर प्रो. नासिर रज़ा खान ने सबसे पहले कार्यक्रम में मौजूद मेहमानों का स्वागत और अभिनन्दन किया, फिर उन्होंने मेहमानों का परिचय कराया। इस सत्र में प्रो. मज़हर आसिफ़ (माननीय कुलपति, जामिया मिल्लिया इस्लामिया), डॉ. रिज़वान कादरी (प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय सोसायटी के सदस्य), श्री याह्या अलदुघैशी (सल्लनत ऑफ़ ओमान दूतावास), प्रो. मोहम्मद मुस्लिम खान (डीन, फैकल्टी ऑफ़ सोशल साइंसेज, जेएमयू), इतिहास विभाग एएमयू से प्रो. मोहम्मद सज्जाद और विभिन्न विश्वविद्यालयों के फैकल्टी और विद्वान मौजूद थे।

प्रो. नासिर रज़ा खान ने सम्मेलन के विषय की प्रासंगिकता के बारे में बताया। प्रो. खान ने सम्मेलन के आयोजन और अध्यक्षीय भाषण देने के लिए माननीय कुलपति, प्रो. मज़हर आसिफ़ को धन्यवाद दिया। उन्होंने सम्मेलन को समर्थन देने में उदारता दिखाने के लिए जेएमयू के रजिस्ट्रार, प्रो. (डॉ.) मोहम्मद महताब आलम रिज़वी के प्रति भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने सम्मेलन के आयोजन के लिए सह-वित्तपोषण के लिए इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च (ICHR) के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

सम्मेलन के बारे में बात करते हुए, प्रोफ़ेसर खान ने बताया कि इस सम्मेलन का मकसद सरदार पटेल की विरासत और सांप्रदायिक सद्भाव पर इसके असर के बारे में बातचीत को बढ़ावा देना और गहरी समझ पैदा करना है। अलग-अलग नज़रियों के लिए एक मंच बनाकर, आयोजकों को उम्मीद है कि वे उन बारीक ऐतिहासिक कहानियों को सामने ला पाएंगे जो अक्सर छिपी रह जाती हैं। उन्होंने बताया कि निज़ामुद्दीन दरगाह के इतिहास की उनकी खोज ने उन्हें सरदार पटेल पर एक सम्मेलन आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि पटेल ने 1947 में निज़ामुद्दीन दरगाह का दौरा किया था और बंटवारे के मुश्किल समय में इसकी सुरक्षा सुनिश्चित की थी। उन्होंने सरदार वल्लभभाई पटेल और भारतीय मुसलमानों के बीच संबंधों के बारे में छिपी और अनकही सच्चाइयों पर चर्चा करने के लिए शिक्षाविदों को एक साथ लाने की ज़रूरत के बारे में बात की। सम्मेलन का मकसद बातचीत को बढ़ावा देना और प्रतिभागियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के ज़रिए नए समाधानों को प्रेरित करना है। श्री याह्या अलदुघैशी (सल्लनत ऑफ़ ओमान दूतावास) ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर भाषण देने के लिए आमंत्रित करने के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने ओमान के साथ भारत के संबंधों के संदर्भ में भारतीय मुसलमानों के साथ पटेल के संबंधों के बारे में बताया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सोशल साइंसेज फैकल्टी के डीन प्रो. मोहम्मद मुस्लिम खान ने देश को एकजुट करने में सरदार पटेल की भूमिका के साथ-साथ भारत के बंटवारे के समय मुसलमानों और हिंदुओं के बीच शांति और सद्भाव बनाए रखने के उनके प्रयासों के बारे में बताया। मुस्लिम खान ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया और इसके पूर्व कुलपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन के साथ पटेल के गहरे जुड़ाव पर प्रकाश डाला, जिसकी जड़ें उनके शुरुआती राजनीतिक जीवन के दौरान पटेल के नेतृत्व में हुए बारडोली आंदोलन में उनकी

साझा भागीदारी में थीं। उन्होंने दर्शकों को बताया कि उस बहुत ही मुश्किल समय में भारत के गृह मंत्री होने के नाते सरदार पटेल ने स्थिति को बहुत अच्छी तरह से संभाला, जहाँ उन्होंने व्यक्तिगत रूप से न केवल दिल्ली में विभिन्न शरणार्थी शिविरों का दौरा किया, बल्कि उन्होंने निज़ामुद्दीन दरगाह का भी दौरा किया, जहाँ उन्होंने अधिकारियों को दरगाह के किसी भी हिस्से को नुकसान न पहुँचाने का निर्देश दिया।

डॉ. रिज़वान कादरी ने मुख्य भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से जुड़ी कई कम जानी-पहचानी कहानियों पर रोशनी डाली। उन्होंने इतिहासकारों और विद्वानों को सरदार पटेल की फाइलों को देखने के लिए आमंत्रित किया और क्षेत्रीय और स्थानीय ऐतिहासिक रिकॉर्ड पर आधारित रिसर्च की तत्काल ज़रूरत पर ज़ोर दिया। उन्होंने मौलाना गुलाम रसूल, जिन्हें इमाम साहब के नाम से जाना जाता है, के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात की, जिनके बारे में उन्होंने एक बार कहा था कि जब भी मैं उदास महसूस करता हूँ और संकट में होता हूँ, तो मुझे इमाम साहब से ताकत और मार्गदर्शन मिलता है। उन्होंने मौलाना हसरत मोहानी के साथ अपने रिश्ते के बारे में भी बताया, जिनका नारा इंकलाब जिंदाबाद सरदार पटेल ने खुद अहमदाबाद से शुरू किया था। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने उन मुस्लिम लीग समर्थकों को माफ कर दिया था जिन्होंने पहले सरदार पर हमला किया था।

जामिया के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ ने रिसर्च करने वालों से क्षेत्रीय भाषाओं, खासकर गुजराती में उपलब्ध प्राइमरी सोर्स के ज़रिए सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन और विरासत को जानने का आग्रह किया। उन्होंने बंटवारे के मुश्किल सालों के दौरान गृह मंत्री के तौर पर पटेल की भूमिका की बारीकी से जांच करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। इस बात पर ज़ोर देते हुए कि पटेल का अध्ययन बड़े स्तर पर किया जाना चाहिए, वाइस-चांसलर ने कहा कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता की गहरी समझ के लिए यह खोज ज़रूरी है। उन्होंने यह भी बताया कि देश में उर्दू प्रसारण सरदार पटेल ने ही शुरू किया था, जो सूचना और प्रसारण मंत्री थे। सिर्फ़ यही नहीं; उन्होंने उर्दू में 'आजकल' पत्रिका शुरू करने में भी मदद की। जब धर्म की बात आती है, तो उन्होंने मदन मोहन मालवीय के एक बहुत मशहूर बयान का ज़िक्र किया, "जैसे मौलाना आज़ाद मुस्लिम हैं, वैसे ही सरदार हिंदू हैं।" वहां, राष्ट्र निर्माता के तौर पर उनकी भूमिका को उनके धर्म के नज़रिए से नहीं, बल्कि राजनेता और नेता के तौर पर उनके कामों के नज़रिए से देखा जाता है।

सत्र का समापन IACC के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आफताब अहमद द्वारा दिए गए औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने सत्र के मुख्य अतिथि, जेएमयू के माननीय वाइस चांसलर, प्रो. मज़हर आसिफ़; मुख्य वक्ता डॉ. रिज़वान कादरी; श्री याह्या अलदुघैशी (सल्लतनत ऑफ़ ओमान दूतावास); प्रो. मोहम्मद मुस्लिम खान (डीन, फैकल्टी ऑफ़ सोशल साइंसेज, जेएमयू); इतिहास विभाग, एएमयू के प्रो. मोहम्मद सज्जाद; और वहां मौजूद विभिन्न विश्वविद्यालयों के फैकल्टी और विद्वानों को धन्यवाद दिया।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी